[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3634

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

"चित्रकला में रंग" (प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल तक के परिपेक्ष्य में)

शोधार्थी– सुरभि त्रिपाठी
शा0 महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, (म0प्र0)

सुख–दुःख, उत्तेजना, भय, विश्राम, उल्लास आदि का पर्याय ही रंग है। रंग प्रकृति के कण–कण में व्याप्त है। घरा के प्रत्येक रंग का अपना एक सौदंर्य व नैसर्गिक गुण होता है, परन्तु उसे किस प्रकार प्रयुक्त किया जाय यह कलाकार की कुशलता एवं दक्षता पर निर्भर करता है, एक प्रकार से रंग ही मनुष्य की प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति हैं, जिसे कलाकार अपने अनुभव के साथ प्रस्तुत करता है। रंगों के प्रति मनुष्य का आकर्षण स्वाभाविक ही नहीं वरन् जन्मजात है, इस प्रकार रंग व्यक्ति विशेष की कलाकृति का सबसे महत्वपूर्ण व सार्थक तत्व है।

रंग व्यक्ति विशेष की अभिव्यक्ति भी है। हिन्दू धर्म में वर्ण (रंग) का अपना विशेष महत्व है– गोर वर्ग ब्राह्मण, लाल वर्ण क्षत्रीय के लिए, पीला–वेश्य तथा श्याम वर्ण (काला) सूद्र के लिए प्रयुक्त किया गया। जिसे हिन्दू धर्म में वर्ण भेद कहा गया है इस प्रकार रंग प्राकृतिक भाव–भंगिमाओं को व्यक्त करता है जो अमुख से भिन्न है, जो वस्तु में भेद पैदा करता है जो उसका अस्तित्व बन जाती है। रंग मनोवृत्ति भी है, जिसका अपना स्वाभाविक गुण होता है। रंग हमारे मनोविकारों को सीधे प्रभावित करते हैं। इसी निमित्त रोग–निदान के लिए 'कलर थेरपी' का सहारा भी लिया जाता है, जिससे विभिन्न रोगियों को रोगमुक्त किया जाता है। इस प्रक्रिया के चिकित्सक–मनोवैज्ञानिक होते है।

रंगों के लिए हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों ने समय–समय पर अपने विचार व्यक्त किये है। कला के लिए विष्णु धर्मोत्तर पुराण का अपना विशेष महत्व हैं, जिसमें कहा गया है :

रेखा च वर्तना चैव भूषणं वर्णमेव च।
विज्ञेया मनुज श्रेष्ठ चित्र कर्मसु भूषणम्।।

अर्थात् 'मार्कण्डेय मुनि कहते हैं कि हे मनुष्यों में श्रेष्ठ राजन! रेखा (लकीर या आकार) लिखावट, अलंकार, अथवा आभरण और वर्ण (पदार्थों के लाल, पीले काले, नीले इत्यादि का भेद) को किसी चित्रकर्म को करने में आभूषण की तरह समझना चाहिए। कलाकार के लिए चित्रों में रंग आभूषण के समान होते हैं, जिसका आकर्षण दर्शक को अपनी तरफ आकर्षित करता हैं, यह आकर्षण एक चित्रकार एवं कलाकार को प्रकृति में मिलता हैं, प्रकृतिक रंगों की भंगिमा व्यक्ति को अपनी और खींचती हैं। यह आकर्षण व्यक्ति के अन्दर धनात्मक ऊर्जा का संचार करता है यह आकर्षण सौंदर्यवान होता हैं, सौंदर्य–संवेदना इन्द्रियों पर आधारित एक गुण, एक अवधारणा और एक अनुभूति है जो औत्मगत होती है।

सौंदर्य प्राकृतिक एवं काल्पनिक होता है। प्राकृतिक सौंदर्य ईश्वरी परिकल्पना है जिसे कोई मानवीय शक्ति नहीं रच सकती, केवल सदैव प्रयासरत रहती है। विभिन्न कलाकार इसकी अनुकृति करते है और इसके रहस्य की खोज करते रहते हैं यह प्राकृतिक सौंदर्य कलाकार को प्रतिपल सजग करता रहता है कलाकार प्रागैतिहासिक समय काल से वर्तमान काल तक प्रकृति के इस सौंदर्य को नहीं समझ पाया। सौदर्य प्रेमी व्यक्ति विशेषों ने प्रकृति के इस सौंदर्य वर्ण को नित–नवीन आयामों में प्रतिपल अपनी तूलिका की सम्वेदना शक्ति से उकेरना का प्रयास किया है।

प्रागैतिहासिक समय काल में कलाकारों ने अपने संघर्षशील जीवन के साथ हर्षोउल्लास के पलों को रंगीन रेखा चित्रों से अमर बना दिया 'पूर्वपाषाण काल का मानव कुड़ापा तथा चेन्नई (मद्रास) क्षेत्र तक सीमित रहा लेकिन उत्तर–पाषाण काल का मनुष्य सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैल गया और बेलारी उसका प्रधान केन्द्र रहा। इस समय का मनुष्य चाक पर बने कच्चे वतर्नों का प्रयोग करता था तथा कुछ 'स्थानों पर हिरौंजी के टुकड़े, सिल और पत्थर प्राप्त हुए है जिससे यह पता चलता है कि वह हिरौंजी का रंग के रूप में प्रयोग करता था। प्रागैतिहासिक काल के कलाकार ने अपने रेखा चित्रों में लाल, काले या पीले रंगों का प्रयोग किया है, जिस में लाल, गेरू या हिरौंजी, काले–कोयला, काजल तथा सफेद–खड़िया से इन रंगों को पशु की चर्बी में मिलाकार प्रयोग किया था। इन चित्रों की सीमा रेखाऐं सशख्त होती थी।
प्रागैतिहासिक काल के चित्रकारों के प्रकृति से प्रेरित होकर रंग का प्रयोग प्रारम्भ किया और समय के चलते–चलते सिन्धु घाटी सभ्यता में यह रंग विधान बौद्धकाल में प्रवेश करते है और बौद्ध काल में चित्रकला का सर्वांगीण विकास हुआ इसी समय काल में वात्स्यान ने कामसूत्र की संरचना की। कामसूत्र अमूल्य ग्रन्थ है जिस में चित्रकला के निमित्ति षडंग भेद का विवेचन किया, जिसमें चित्रकला के छः अंगों को विशेष महत्व दिया–

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रूपभेदाः प्रमाणनि भाव, लावण्ययोजनम्।
सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रं षडंगकम्।।

इस श्लोक में अन्य पांच अंगों के साथ वर्ण को अपना विशेष महत्व रहा है। इस प्रकार उपरोक्त पांच कला अंगों के वर्ण विधि तथा तूलिका ही साकार रूप प्रदान करती है। यद्यपि चित्र सूत्र के अनुसार वर्ण पांच माने गये है परन्तु इनके समिश्रण से सैड़कों सम्मिश्रित वर्ण उत्पन्न होते है।

''वर्ण ज्ञानं नास्ति किं तस्य जयपूजनेः।''

अर्थात वर्णिका भंग पूर्णता प्राप्त करने के लिए लघुता, क्षिप्रता और हस्तलाघव और वर्ण के कौशल की आवश्यकता है। अजन्ता कला ने भित्ति चित्रण परम्परा को जन्म दिया यह शैली 'टेम्परा तथा फ्रेस्को विधि का सम्मिश्रण है। अर्थात् यह इटली के फ्रेस्को विधि से भिन्न है। इस विधि में सफेद, लाल, पीले और विभिन्न भूरे रंग है, इनके अतिरिक्त एक गंदे हरे (संग सब्ज या टेराबर्ट) और नीले (लेपिसलाजुली) रंगों का प्रयोग है। सफेद रंग प्रायः अपारदर्शी है और चूने तथा खड़िया से बनाया गया है। लाल तथा भूरा रंग लोहे के खनिज रंग हैं तथा हिरौंजी से भी लिया गया है। हरा रंग एक स्थानीय पत्थर से जो तॉबे का खनिज रंग है, जिसे टेरावर्ट (संग–सब्ज) कहते है। नीले रंग के लिए लेपिसलाजुली रंग का प्रयोग किया है यह रंग एक बहुमूल्य खनिज–पत्थर से बनाया जाता था और इस रंग को फारस तथा बदख्शां से आयात किया जाता था। अजन्ता के कलाकार ने रंगों का प्रयोग बखूबी से किया हैं यह चित्र भी भावाभक्ति के पूरक हैं। कलाकार ने ताजगी, स्वतन्त्रता, सर्वनाश, ज्ञान की प्राप्ति, शांत, विस्मय, हर्षों उल्लास इत्यादि भावों को रंगविधान के साथ बखूबी से निभाया है। अजन्ता तथा बाघ, बादामी, सित्तन्नवासल तथा सिगिरिया इत्यादि में वर्ण विधान समान ही रहा है।

बौद्धकाल से गुजरते हुए मध्यकाल की पौथियों में खनिज वर्ण के साथ वानस्पतिक वर्ण का संगम हुआ पुनः राजस्थानी कला में शौर्यगाथाओं, प्राकृतिक लावण्य, भव्य राजप्रयादों, विलक्षण सांस्कृतिक परम्पराओं आदि कारण यह चित्र शैली के विश्व प्रसिद्ध हैं एवं राजस्थानी कलात्मक विलक्षण लघुचित्रों का खजाना होने का गौरव प्राप्त हैं। राजस्थानी परम्परा में पौराणिक एवं कृष्ण लीलाओं के चित्र ऋतु एवं रागमाला के चित्र – भारत ऋतु प्रधान देश है। इसमें छः ऋतुओं का क्रमानुसार आगमन एक विशेषता है। इस प्रकार राजसी वैभव, घरेलू, जीवन के चित्रों में औझमयी, तेजस्वी प्रखरता से परिपूर्ण रंग विधान विश्व को अपनी तरफ आकर्षित करते है। वहीं मुगल वैभव भारतीय संस्कृति में विदेशी चित्र परिवर्तन लाता है। यह परिवर्तन महीन रेखाओं से परिपूर्ण औझमयी चटख रंग अलंकरण लिये हुये है। तथा वाचस्पती गैरोला के अनुसार ''मानवीय अभीप्साओं, आचरणों और भावनाओं के ठीक अनुरूप चित्र जहाँगीर के ही समय में बने। जहाँगीन के समय में जिन रंगों का निर्माण हुआ और उनका जिस ढंग से उपयोग किया गया, वह अपूर्व था। रंगों के अतिरिक्त रेखाओं की दिशा में जहाँगीर कालीन चित्र विशेष है। मुगल शैली में रंग देशी तरीके से बनाये गये थे। रंग मुख्यतः खनिज गेरू, हिरौंजी, रामरज, लाजवर्दी, सोना, चांदी तथा रसायनिक सफेदा, प्योड़ी, सिन्दूर, स्याही (काजल) वानस्पतिक नील, महावर आदि रंगों का प्रयोग किया गया है। मुगल चित्रों में शुद्ध रंगों का इतना प्रयोग नहीं है जितना कि राजस्थानी लघु चित्रों अथवा मध्यकालीन चित्रों में है। इन चित्रों में सभी रंगों के साथ सफेद रंग के मिश्रण से सोफियानी रंग योजना है। चित्रों की आकृतियों में गहराई अथवा छाया प्रकाश दर्शाने के लिए गहरे रंग का प्रयोग किया गया है। राजस्थानी एवं मुगल की वैभवशाली रंग योजना पहाड़ों की लोक कला में सम्मलित होकर एक नवीन शैली को जन्म देती है जो पहाड़ी शैली के नाम से जगजाहिर हुई। यहाँ की काँगड़ा शैली की रंग योजना अपना विशेष स्थान रखती है। यहाँ के कलाकार ने राग–रागनी चित्र, प्रेम की अवस्थाऐं एवं विभिन्न भावों को शुद्ध अमिश्रित रंगों से ओत–प्रोत एवं भाव विभोर बना दिया है ''हल्के रंगों में गुलाबी, बैंगनी, हरा फाखताई तथा हल्के नीले रंग का प्रयोग किया है'', स्त्रियों के परिधानों में अल्जेरियन क्रेमजन का प्रयोग किया है। आभूषणों में सौने, चांदी, के रंगों को स्थान प्रदान किया गया है।

भारतीय कला शैलियों में पहाड़ी शैली के पश्चात् अनेक क्षेत्रीय शैलियों ने अपना स्थान तैयार किया समय के विदेशी आक्रमणी थपेड़ों ने अपने–अपने रपैर जमाने शुरू किये जिनमें इस्ट इंडिया कम्पनी ने अपने तरीके की चित्रकला का प्रचलन चलाया जिसे कम्पनी चित्र शैली के नाम से पुकारा गया। इस शैली में रंगों को मिश्रितकर, छाया–प्रकाश की विभिन्न झटाओं को प्रस्तुत करने का प्रचलन था। ब्रिटिश कलाकार यथार्थ चित्रण को ही प्रोतसाहित कहते थे, वह प्रकृति के अनुकरण पर आधारित चित्रण कार्य करते और भावाव्यक्ति को रंगों में न व्यक्त करते हुऐ मुद्राओं को तैयार करते थे। कम्पनी शैली के कलाकारों में ''लाल चंद और गोपाल चंद सेवकराम तथा शिवलाल प्रमुख थे इसके अतिरिक्त हुलासलाल, जयराम दास, झूमकलाल, फकीरचंद आदि रहे है। इस सबके साथ एक नाम भारतीय चित्रकला श्रृंखला में राजा रवि वर्मा का आता है। जिन्होंने भारत के प्रत्येक गॉव तथा घर–घर में अपने चित्रों का पहुँचाने का काम किया है। राजा रवि वर्मा ने पाश्चात्य कला शैली में भारतीय विषयों को पिरोया। कम्पनी ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में बोम्बे, मद्रास, लखनऊ, दिल्ली, पढ़ना इत्यादि स्थानों पर कला विद्यालय खोले इस प्रकार भारतीय कला की भाव भंगिमा ने यथार्थवादी भंगिमा को ग्रहण किया पुनः ई0वी0 हैवेल तथा अवनीन्द्र नाथ ठाकुर के प्रयासों से भारतीय कला का पुनरूत्थान हो पाया अब भारत में पाश्चात्य प्रभाव दिखाई देने लगे। विभिन्न तकनीक विभिन्न आयाम, विभिन्न रूपाकार

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अभिव्यक्तियों के माध्यम से बनने लगे साथ ही व्यंजना के आधार पर रंग कर्म किया जाने लगा यह सब कला कर्म आधुनिक कला के रूप में जाने जाते हैं। बंगाल स्कूल ने भारतीय रेखा रंग को ध्यान में रखकर कार्य किया खनिज, जल रंग टेम्परा पद्धति, वास पद्धति, तैल पद्धति, एक्रेलिक पद्धतियों ने आधुनिक कला परिदृश्य में जन्म लिया और नवीनता बिखेर दी। दिल्ली शिल्पी चक्र–भवेश सान्याल, कुलकर्णा, प्राणनाथ मागो, रविशंकर रावल इत्यादि ने बम्बई के पैग ग्रुप–हुसैन, रज़ा, सूज़ा, गाडे, बेन्द्रे गायतोण्डे, कलकत्ता ग्रुप– रथीन मैत्र, गोपाल घोष, सुनील माधव सेन, पारितोष सेन इत्यादि ने पाश्चात्य एवं भारतीय परम्परा को मिश्रित कर एक नवीन भारतीय शैली को जन्म दिया और अन्तर्राष्ट्रीय कला परिदृश्य में भारतीय परचम फैलाया। सतीश गुजराल का रंग विधान, तैयब मैहता, राम किंकर बैज, यामिनी रंजन राय, रविन्द्रनाथ टैगोर अमृता शेरगिलक आदि ने अपने–अपने रंग कर्म को अपनी बनाया है।

समकालीन कला परिदृश्य में अनेका–अनेक चित्रकार अपनी भावा व्यक्तियों को नित–नवीन पद्धतियों के माध्यम से सम्पूर्ण भारत ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को एक आयाम प्रदान कर पा रहे है। आज रंग कर्म के लिए इतनी प्रवृत्तियाँ प्रस्तुत है साथ ही समयानुसार आविष्कार होते रहते है। रंग प्रकाश की एक प्रक्रिया है प्रकाश की उपस्थिति रंग को जन्म देती है 1676 ई0 में न्यूटन ने प्रकाश की किरणों को विभिन्न रंगों में बॉटा जिसे प्रकाश का विक्षेपण कहा जाता है– प्रकाश के रंग में सात रंग बताये गये– पस्तु प्रकाश के स्पेक्ट्रम में केवल तीन रंग की व्याख्या होती हैं लाल, पीला, नीला यहाँ पर एक रंग के साथ दूसरे रंग परिवर्तित होते है, इसलिए प्रकाश के सात रंग– लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, नीलमणि व बैंगनी दिखाई देते है।

समकालीन कलाकार वेदप्रकाश पालीवाल

प्रकृति में वैज्ञानिक स्तर पर तीन लाल, नीला, पीला प्राथमिक रंग की संज्ञा में रखे जाते हैं तथा द्वितीयक रंगत– पीला + लाल = नारंगी, लाल + नीला = बैंगनी, नीला + पीला = हरा। तृतीयक रंगत की श्रेणी में द्वितीय श्रेणी के दो रंगों के मिश्रण से जो रंग तैयार होते हैं। उन्हें तृतीय श्रेणी ;ज्मतजपंतलद्ध रंग कहा जाता है। नारंगी + बैंगनी = रसैट, बैंगनी + हरा = सिटरिन, नारंगी + हरा = ऑलिव। रंगों में विरोधी भाव भी होता हैं – पीला–बैंगनी = भूरा, लाल + हरा = भूरा, नीला + नारंगी = भूरा। वैज्ञानिक अध्ययन से श्वेत तथा काले रंग को रंगों की संज्ञा में नहीं रखा जाता क्योंकि यह रंग रंगों की तीन को गहरा और हल्का बनाते है जैसे श्वेत प्रत्येक रंग तीन को हल्का करता है जिसे टिंट कहा जाता है, काला रंगतान को गहरा करता है जिसे सेड कहा जाता है। परन्तु धर्मशास्त्रों में मूलतः पांच प्रकार के रंगों का उल्लेख किया जाता है– श्वेत (सफेद), पीत (पीला), लाल, नीला और काला – उक्त श्लोक में मूल रंग पांच बताये गये है–

"लाक्ष्या श्वेतया युक्ता लाक्षारोघ्रविनन्ध्दया।
रक्ता रक्तोत्पलश्यामाच्छवि भर्वति शोभना।
सापि नानाविधानन्यान्वर्णन् विकुरूते बहून्।।

भारतीय प्रागैतिहासिक मानव काल से लेकर वर्तमान काल तक के चित्रकला परिदृश्य में देखते है कि प्रत्येक मानव कलाकार रंगों से अछूता नहीं रहा। सम्पूर्ण लेख के पश्चात् हम कह सकते हैं कि रंग का कला में महत्वपूर्ण स्थान है। चित्र रचना में अन्य मूल रचना तत्वों की अपेक्षा रंग सर्वप्रथम दृष्टि को आकर्षित करता है। इसके आकर्षण से कोई भी नहीं बच पाया। रंगों में हम मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न कर पाते हैं रंग का मानव चेतना से गहरा सम्बन्ध हैं रंगों के द्वारा मानव अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति अच्छी तरह से कर पाता है। रंगों के द्वारा आप अमुख व्यक्ति विशेष के स्वभाव और प्रकृति को समझ सकते है। रंग और भारतीय रस का गहन सम्बन्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 *डॉ0 गिराज किशोर अग्रवाल – कला कलम।*
2 *वाचस्पति गैरोला – भारतीय चित्रकला*
3 *डॉ0 ह्रदय गुप्त – दृश्य कला के मूलभूत सिद्धान्त, तकनीक और परम्परा।*
4 *अविनाश बहादुर वर्मा – भारतीय चित्रकला का इतिहास।*
5 *डॉ0 गिराज किशोर अग्रवाल – कला के मूलाधार।*
6 *अविनाश बहादुर शर्मा – कला और तकनीक।*